मध्यप्रदेश शासन वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

वर्ष 01, अंक 04, जुलाई-सितंबर, 2017

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

Year 01, Vol. 04, July- September, 2017

INTERNATIONAL TIGER DAY
29th July, 2017

Madhya Pradesh Forest Department
Satpura Bhawan, Bhopal-462004
Website: www.mpforesr.gov.in

मध्यप्रदेश माध्यम/2017

पातालकोट, मध्यप्रदेश

पातालकोट, मध्यप्रदेश

RNI A/F
Application No. : 2017083332

Feedback, suggestions and contributions are welcome at dcfpracharprasar@mp.gov.in

मध्यप्रदेश शासन वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

वर्ष 01, अंक 04, जुलाई-सितंबर, 2017

Madhya Pradesh Vananchal Sandesh

Year 01, Vol. 04, July- September, 2017

Patron :

Dr. Animesha Shukla
Principal Chief Conservator of Forests (HOFF)

Editorial Board :

Shahbaz Ahmad
Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

S.P. Rayal
Additional Principal Chief Conservator of Forests(Development)

Dr. Abhay Kumar Patil
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Complaints and Redressal)

Dr. P.C. Dubey
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

Alok Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Wildlife)

Dr. Pankaj Srivastav
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(JFM)

Sameeta Rajora
Chief Conservator of Forests
Director Van Vihar

B.K. Dhar
Prachar Adhikari

Editor :

Dr. Pankaj Srivastav, APCCF

Prachar Prasar Prakosth Team :

S.P. Jain, DCF
Rohan Saini, Coordinator

Contact :
Prachar Prasar Prakosth, Room no. 140,
Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in
Contact : 07552524293

Published by :
Prachar Prasar Prakosth

Patal Pani Falls

The views expressed in various articles belong to the authors of the article. Madhya Pradesh Forest Department may not agree with the views expressed by authors and will not be responsible for the correctness of the article. Madhya Pradesh Forest Department is not responsible for any liability arising out of context/ text of the article published in this magazine.

No part of this magazine can be reproduced and published without the consent of the publisher of Madhya Pradesh Vananchal Sandesh. All legal disputes will come under the jurisdiction of Bhopal, Madhya Pradesh

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

वर्ष 01, अंक 04, जुलाई-सितंबर, 2017

विषय सूची

1. **प्रदेश में पौधारोपण का महाभियान, बना देश का कीर्तिमान** 1

2. **दीनदयाल वनांचल सेवा** 5

3. Tiger Day Celebrations 6

4. **राज्य स्तरीय टाईगर स्ट्राइक फोर्स की उपलब्धियां** 7

5. **राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की गतिविधियाँ** 8

6. **ईकोपर्यटन विकास बोर्ड की गतिविधियाँ** 10
   - बटरफ्लाई सर्वे एवं अवेयरनेस कैंप का आयोजन
   - आतिथ्य सत्कार प्रशिक्षण कार्यक्रम
   - मटकुली में ट्रेकिंग कैम्प का आयोजन
   - नाव चालन प्रशिक्षण

7. **मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड की गतिविधियाँ** 13
   - माटी बीज गणेश सजीव अभियान का आयोजन
   - जैवविविधता सीख एवं प्रदर्शन केन्द्र की स्थापना

8. **नवाचार** 14
   - बाघ की क्रियाशीलता को बनाए रखने के लिए वन विहार में किया गया अनूठा प्रयोग
   - Kanha Bhoor Singh School

9. **सफलता की कहानी** 16
   - Vulture Conservation: From Chick To Fledgling
   - मध्यप्रदेश में संरक्षित क्षेत्रों से स्वैच्छिक ग्राम विस्थापन

10. **विविधा** 19
    - वन महोत्सव कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह के साथ शामिल हुए श्री अमित शाह
    - दम्पत्ति वनमहोत्सव का आयोजन
    - कान्हा टाईगर रिजर्व में हाथी रिजुविनेशन कैम्प का आयोजन
    - कान्हा टाईगर रिजर्व को मिला SKOCH Order -of-merit Award
    - वन विहार में आये नये मेहमान
    - Sensitization Workshop on Conservation Assured Tiger Standards (CA|TS)
    - क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन
    - Pench Monsoon Trek
    - विभागीय समाचार एवं गतिविधियां

11. **अखबारों के आइने में** 28

12. **प्रशंसा एवं पारितोषिक** 30

13. **हरित साहित्य** 33
    - जंगल
    - लकड़ी

14. **Ecotourism Destinations in Madhya Pradesh : Kukru Khamla** 35

15. **पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति** 36

संपादकीय

मध्यप्रदेश में पौधा रोपण के महा अभियान पर केन्द्रित पत्रिका का यह अंक प्रदेश में वानिकी के नये आयाम का दस्तावेज है। भारत में किसी नदी बेसिन को लेकर वृक्षारोपण का इतना बड़ा अभियान अभूतपूर्व है। मध्यप्रदेश की जीवन रेखा नर्मदा का प्रवाह अविरल और निर्मल बनाये रखने की दृष्टि से नर्मदा कछार में दिनांक 02 जुलाई, 2017 को 7 करोड़ से भी अधिक पौधे लगाये जाकर ''गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकाडर्स'' में कीर्तिमान बनाने की ओर कदम बढ़ाया जा चुका है। प्रदेश में माननीय मुख्यमंत्री जी की पहल पर क्रियान्वित किये गये इस अभियान को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर न केवल सराहना मिली बल्कि कई प्रदेशों के अधिकारियों के दल इसके अध्ययन हेतु आ चुके हैं। अभियान के दौरान संपन्न हुई गतिविधियाँ इस अंक का मुख्य आकर्षण है।

मध्यप्रदेश वन विभाग की अलग-अलग शाखाओं द्वारा अनुसंधान और मैदानी गतिविधियों के संचालन में अनेक नवाचार किए जा रहे हैं। जनभागीदारी से वनों का कुशल प्रबंधन करने के लिये कृतसंकल्प राज्य शासन की मंशा के अनुरूप विभिन्न वनक्षेत्रों के प्रबंधन में स्थानीय जनसमुदाय को जोड़कर वन विकास एवं वन विस्तार द्वारा वनावरण बढ़ाना और वन्यप्राणियों का कुशल प्रबंधन करना विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकता में आता है। इसी प्रकार वनांचलों में बसने वाले ग्रामीणों की मूलभूत सुविधाओं, आजीविका आदि के लिये भी विभाग की विभिन्न योजनाओं में प्रयास किए जाते हैं। दीनदयाल वनांचल सेवा के अंर्तगत आयोजित शिविर प्रकार की गतिविधियों का प्रमाण हैं, जिन्हे व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हो रहा है। इस प्रकार के सभी प्रयासों की झलकियाँ पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित की गई हैं जिनमें जैव विविधता संरक्षण, ईको पर्यटन, अधिकारियों/कर्मचारियों को प्राप्त हुए प्रशंसा एवं पारितोषिक तथा अन्य महत्वपूर्ण विभागीय गतिविधियों को संकलन किया गया है। गिद्ध संरक्षण की सफलता का भी विशेष विवरण दिया गया है।

अपेक्षा यह है कि मध्यप्रदेश वनांचल संदेश एक तरफा संवाद का माध्यम न होकर अधिक से अधिक स्थानीय उपलब्धियों को समाहित कर सके, अत: मैदानी अधिकारियों/कर्मचारियों की उपलब्धियों को सम्मिलित करने के लिए भेजा जाना पत्रिका के आगामी अंको को अधिक उपयोगी बना सकेगा। इस अंक पर आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में।

डॉ. पंकज श्रीवास्तव

प्रदेश में पौधारोपण का महाभियान, बना देश का कीर्तिमान

2 जुलाई को नर्मदा कछार में रोपे गये 7 करोड़ से अधिक पौधे

''नमामि देवि नर्मदे'' नर्मदा सेवा यात्रा के दौरान दिनांक 21 मार्च, 2017 को सिहोर जिले के आवंलीघाट पर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा यह घोषणा की गई कि नर्मदा नदी के दोनों तटों पर आगामी 2 जुलाई, 2017 को अमरकंटक से अलीराजपुर तक लाखों पौधों का रोपण किया जायेगा। इस घोषणा के साथ ही वन विभाग एवं अन्य सम्बन्धित विभाग एवं संस्थाएं इस रोपण अभियान की तैयारी में जुट गये एवं अन्ततः निर्धारित दिवस पर 6 करोड पौधों के लक्ष्य के विरूद्ध 7 करोड़ से अधिक पौधों का रोपण कार्य सम्पन्न हुआ।

2 जुलाई, 2017 को पूरे नर्मदा बेसिन में एक उत्साह का माहौल था। लोग सुबह 7 बजे से ही रोपण स्थलों पर पहुंचने लगे थे। माननीय मुख्यमंत्रीजी द्वारा भी अमरकंटक, लम्हेटाघाट (जिला जबलपुर) छापनेर (जिला सीहोर) एवं ओंकारेश्वर (जिला खण्डवा) में रोपण कार्यक्रम में भाग लिया। माननीय वनमंत्री जी अमरकंटक में रोपण में सम्मिलित रहे। मुख्य सचिव म.प्र. शासन द्वारा सीहोर वन मण्डल में रोपण किया गया। अपर मुख्य सचिव, वन श्री दीपक खाण्डेकर द्वारा जबलपुर पहुंच कर इस अभियान को प्रोत्साहित किया गया। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला द्वारा होशंगाबाद, ओबेदुल्लागंज एवं सीहोर वन मण्डलों में जाकर कार्यो की समीक्षा की गई एवं रोपण में हिस्सा लिया गया। इसके अतिरिक्त प्रदेश के सभी मंत्रीगण, जन प्रतिनिधि एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा भी किसी न किसी स्थल पर पहुंच कर इस अभियान में योगदान दिया गया।

2 जुलाई के पौधारोपण महाभियान में माननीय मुख्यमंत्री सीहोर जिले में बुधनी के समीप छीपानेर में पौधारोपण करते हुए

माननीय वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार अमरकंटक में पौधारोपण करते हुए

2 जुलाई 2017 को विभाग/संस्थावार किये गये रोपण

क्रमांक	विभाग/संस्था का नाम	रोपित पौधे (लाख में)
1	वन	318.24
2	ग्रामीण विकास विभाग	187.42
3	अन्य	65.99
4	कृषि	56.32
5	उद्यानिकी	41.99
6	जन अभियान परिषद	21.40
7	वन विकास निगम	19.02
	योग	710.40

गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में दस्तक दे रहा पौधारोपण महाभियान

2 जुलाई 2017 के रोपण का मुख्य उद्देश्य नर्मदा तट का संरक्षण एवं उसके अविरल प्रवाह की निरंतरता को सुनिश्चित करना था। चुंकि यह एक अभूतपूर्व प्रयास था, अत: निर्णय लिया गया कि गिनीज़ बुक ऑफ वल्ड रिकार्ड्स् में इसे एक कीर्तिमान के रूप दर्ज कराने की कार्यवाही की जाए। श्री वाय. सत्यम, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (विकास) को यह दायित्व सौपा गया।

2 जुलाई 2017 को जिलेवार रोपण के आँकड़े

क्रमांक	जिला	रोपित पौधों की संख्या (लाख में)
1	होशंगाबाद	62.08
2	मंडला	50.99
3	खरगौन	50.77
4	नरसिंहपुर	50.42
5	हरदा	47.03
6	देवास	45.30
7	जबलपुर	45.00
8	खंडवा	41.33
9	धार	38.82
10	रायसेन	35.10
11	अलीराजपुर	33.90
12	डिंडोरी	33.07
13	सिवनी	32.71
14	बैतूल	28.63
15	सीहोर	27.73
16	बड़वानी	26.08
17	छिंदवाड़ा	16.69
18	इन्दौर	15.60
19	अनूपपुर	11.77
20	कटनी	6.98
21	बालाघाट	5.10
22	सागर	2.22
23	दमोह	2.01
24	बुरहानपुर	1.07
	योग	**710. 40**

अपर मुख्य सचिव, वन श्री दीपक खाण्डेकर जबलपुर जिले में पौधारोपण करते हुए

उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण (स्वतंत्र प्रभार) एवं वन राज्य मंत्री श्री सूर्यप्रकाश मीणा रायसेन में पौधारोपण करते हुए

मुख्य सचिव, म.प्र. शासन श्री बसंत प्रताप सिंह सीहोर जिले में पौधारोपण करते हुए

गृह एवं परिवहन मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह सागर जिले के ग्राम झिरिया में पौध-रोपण करते हुए

2 जुलाई 2017 के रोपण की झलकियाँ

जनसंपर्क व जल संसाधन मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र पौधारोपण महाभियान के अन्तर्गत बैतूल में पौधारोपण करते हुए

वित्त मंत्री श्री जयंत मलैया दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा में पौधारोपण महाभियान में शामिल होते हुए

2 जुलाई 2017 के रोपण की झलकियाँ

राजपूत लोक निर्माण मंत्री श्री रामपाल सिंह सिलवानी में पौधारोपण करते हुए

महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस बुरहानपुर में पौधारोपण महाभियान कार्यक्रम में शामिल होते हुए

वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला सीहोर जिले में पौधारोपण करते हुए

पौधारोपण अभियान में स्कूली छात्रों द्वारा बड़ी संख्या में भाग लिया गया

होशंगाबाद जिले मे जनसमूह पौधारोपण करता हुआ

सीहोर जिलें मे पौधारोपण

दीनदयाल वनांचल सेवा

प्रदेश में स्वस्थ जन–स्वस्थ वन की अवधारणा पर आधारित ''दीनदयाल वनांचल सेवा'' के माध्यम से प्रदेश के सुदूर वनांचलों में स्वास्थ्य, पोषण तथा शिक्षा का अधिकतम लाभ ग्रामीणों को उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। इस योजना के तहत 484 स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जा चुका है और आगे भी जारी है। इन शिविरों में सितम्बर 2017 तक 54 हजार ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया है, जिसमें अधिकांश महिला एवं बच्चे सम्मिलित हैं। जमीनी स्तर पर दीनदयाल वनांचल सेवा को बेहतर ढंग से लागू करने के लिए 286 प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर मास्टरट्रेनर्स द्वारा 9 हजार 234 वनकर्मियों को स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित विशेष प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया है। दीनदयाल वनांचल सेवा अंतर्विभागीय समन्वय का एक अनूठा उदाहरण है। दीनदयाल वनांचल सेवा की अल्पसंपादन अवधि में संयुक्त वन प्रबंधन समितियों में उत्साह का संचार हुआ है। वन समितियां तथा वनकर्मी वनों के संरक्षण और विकास में मिलकर कार्य कर रहे हैं।

3 सितम्बर 2017 को डिण्डोरी में 07 स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया है। इन शिविरों में 1,630 ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया है–

क्रमांक	विवरण	संख्या
1.	कुल स्वास्थ्य शिविर	7
2.	वन ग्रामों की संख्या	74
3.	कुल पंजीकृत मरीजों की संख्या	1630
4.	हाईरिस्क गर्भवती महिलाओं की संख्या	551
5.	गंभीर ऐनीमिया के प्रकरण	415
6.	अन्य बीमारियों से संबंधित	664
7.	उपस्थित चिकित्सकों की संख्या	35

स्वास्थ्य शिविरों की झलकियां

Tiger Day Celebrations

Awareness Generation in Human Wildlife Conflict Prone Areas near Bhopal

On the occasion of Global Tiger Day - 29th July, MP Tiger Foundation Society organizes various events and campaigns for children and youth in Bhopal for generating awareness regarding Wildlife Conservation.

This year, the MP Tiger Foundation Society partnered with Regional Museum of Natural History, Bhopal (RMNH), Global Biodiversity Education Society and schools in Mendora region near Bhopal. A one day awareness event was organized for youth in Mendora Region near Bhopal at the Kerwa Ecotourism Centre. The rationale for organizing the event was to create a dialogue with the youth and understand their perceptions and thoughts about the presence of Tiger near Kerwa Region. The program was conducted in an interactive manner and concepts of Food Chain, Ecosystem Services and Water Cycles etc. were discussed with participants by making use of participatory learning games.

Group activity was conducted in the Technical Session whereby the participants brainstormed and expressed their thoughts and opinions in an illustrative manner. Subject experts then communicated with the participants to give essential inputs on the thoughts evoked throughout the day and implications of wildlife conservation and tiger movement in Mendora region.

राज्य स्तरीय टाईगर स्ट्राइक फोर्स की उपलब्धियां

राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स सागर द्वारा प्रकरण क्रमांक 28060/02 दिनांक 05/05/2017 को दर्ज किया गया था, जिसमें कछुओं के अवैद्य तस्करी के मामले में अभी तक कुल 8 आरोपी गिरफ्तार किये जा चुके है। इन में शामिल उत्तर प्रदेश के कुख्यात आरोपी आगरा एवं मैनपुरी से गिरफ्तार किये गये। गिरफ्तार किये गए आरोपियों में मछली का एक ठेकेदार भी शामिल है।

राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स भोपाल एवं राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स जबलपुर की संयुक्त कार्यवाही में दिनांक 16 अगस्त 2017 को दक्षिण छिंदवाडा वनमंडल से चार आरोपियों को 02 नग तेंदुआ खाल एवं 20 नग नाखून के साथ पकड़ा गया।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की गतिविधियाँ

1. 2 जुलाई, 2017 को वृक्षारोपण

नर्मदा और पर्यावरण के संरक्षण के उद्देश्य से प्रदेशव्यापी वृहद् वृक्षारोपण के तहत् राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर परिसर में विभिन्न संकटग्रस्त प्रजातियों का रोपण दिनांक 2 जुलाई, 2017 को किया गया। इस अवसर पर डॉ. गौरीशंकर शेजवार, माननीय वन मंत्री म.प्र. शासन एवं श्री दीपक खांडेकर, अपर मुख्य सचिव (वन) म.प्र. शासन द्वारा संस्थान परिसर पौधा रोपण किया गया।

डॉ. गौरीशंकर शेजवार वन मंत्री म.प्र. शासन एवं श्री दीपक खांडेकर, अपर मुख्य सचिव (वन) म.प्र. शासन द्वारा संस्थान परिसर में वृक्षारोपण

2. ''जलवायु परिवर्तन तथा अनूकूलन एवं निम्नीकरण में समुदायों की भूमिका''; (Climate Change & Role of Communities for Adaptation and Mitigation) विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में दिनांक 18 व 19 सितम्बर, 2017 को क्लाईमेट चेंज एंड रोल ऑफ कम्यूनिटीस फॉर एडैप्टेशन एवं मिटिगेशन (जलवायु परिवर्तन तथा अनूकूलन एवं निम्नीकरण में समुदायों की भूमिका) विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्थान के सभागृह में संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री जे.के. मोहन्ती, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान एवं प्रशिक्षण) मध्यप्रदेश द्वारा किया गया।

संगोष्ठी के शोधपत्रों की संकलन पुस्तिका का विमोचन

संगोष्ठी के प्रतिभागियों का समूह चित्र

3. जलवायु सक्षम ग्राम विकसित करने हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

राज्य वन अनुसंधान जबलपुर के जलवायु परिवर्तन प्रकोष्ठ द्वारा संचालित एवं मध्यप्रदेश वन विभाग के अनुसंधान, विस्तार एवं लोक वानिकी कक्ष द्वारा प्रायोजित अनुसंधान परियोजना "Climate Change and its impact on forest and the livelihood of people in Damoh District" के अंतर्गत दिनांक 18 सितम्बर को जिले के इमलीडोल, बगदरी, तेंदूखेड़ा ग्राम के कृषकों एवं ग्राम वन समितियों के सदस्यों के साथ ''जलवायु–सक्षम (climate smart); ग्राम विकसित करना'' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

इमलीडोल के ग्रामीणों को श्री जे. के. मोहन्ती, प्र.मु.व.स. (अनु. एवं प्रशि.) म.प्र. द्वारा पुरस्कार वितरण

4. औषधीय पौधों के आंचलिक सह सुगमता केन्द्र (Regional Cum Facilitation Center, RCFC) की स्थापना

औषधीय पौधो के क्षेत्र में विभिन्न गतिविधियों में समन्वय हेतु राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (National Medicinal Plant Board, NMPB) द्वारा देश को पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिण–मध्य और पूर्वोत्तर के छः क्षेत्रों में विभाजित कर प्रत्येक क्षेत्र में एक आर. सी. एफ. सी का गठन किया गया है। मध्य क्षेत्र में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश के दक्षिणी जिलों का समावेश किया गया है।

यह केन्द्र स्थानीय हितधारकों/संगठनों के सहयोग से औषधीय पौधों के प्राथमिक प्रसंस्करण, ग्रेडिंग और विपणन सुविधाएं की स्थापना तथा कृषको एवं संग्राहको सहित संबंधित हितधारकों को बीच प्रबंधकीय और तकनीकि कौशल विकसित करने का कार्य करेगा।

5. Workshop on Research Formulation Organized

A one day work shop was organized in the Institute on Research Project Formulation on 14th August 2017. Dr. Navin Sharma, Professor, AMITY University and ex-fellow World Agro Forestry Centre, New Delhi was the key speaker on this occasion. He deliberated upon various issues regarding the skill and knowledge required in the formulation of research projects for submission to the international and national research project funding agencies.

Release of Technical Bulletin

Organization of the Workshop

ईकोपर्यटन विकास बोर्ड की गतिविधियाँ

बटरफ्लाई सर्वे एवं अवेयरनेस कैंप का आयोजन

म.प्र. ईको पर्यटन विकास बोर्ड एवं सतपुड़ा रिजर्व होशंगाबाद के द्वारा दिनांक 08 से 10 सितम्बर 2017 तक पचमढ़ी में तीन दिवसीय बटरफ्लाई सर्वे एवं अवेयरनेस कैंप आयोजित किया गया। इस सर्वे एवं अवेयरनेस कैंप का मुख्य उद्देश्य सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के पचमढ़ी क्षेत्र में पाए जाने वाली तितलियों की पहचान करना, तितलियों के बाहुल्य क्षेत्र का संरक्षण करना, तितलियों के संरक्षण के सम्बन्ध में जागरूकता बढ़ाना एवं पचमढ़ी क्षेत्र में ईको पर्यटन को बढ़ावा देना है। इस तीन दिवसीय कार्यकर्म में देश के विभिन्न राज्यों से 102 प्रतिभागियों ने भाग लिया, इनमे 21 तितली विशेषज्ञ भी शामिल थे। इस कार्यक्रम के दौरान तितली विशेषज्ञ एवं प्रभागियों द्वारा 97 तितलियों की पहचान की गयी। इनमें से प्रथम बार सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के पचमढ़ी क्षेत्र में (1) Club silver line (क्लब सिल्वर लाइन) (2) Long bended silver line (लांग बैंडेड सिल्वर लाइन) (3) Orange tailed awl (ऑरेंज टेल्ड आवल) की खोज की गई।

आतिथ्य सत्कार प्रशिक्षण कार्यक्रम

मध्यप्रदेश ईकोपर्यटन विकास बोर्ड द्वारा ईकोपर्यटन एवं आतिथ्य गतिविधियों से जुड़े श्रमिकों व कर्मचारियों की क्षमता विकास हेतु मध्यप्रदेश स्टेट इन्स्टीट्यूट ऑफ हॉस्पिटालिटी, भोपाल में पर्यटन एवं सत्कार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कराया गया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य श्रमिकों व कर्मचारियों में अतिथि देवो भवः की भावना को विकसित करना था ताकि वे आगन्तुकों से सौम्यतापूर्वक व्यवहार करें तथा उन्हें गुणवत्तापूर्ण सेवायें प्रदान कर सकें। इस प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाना, सब्जी काटना, खाना परोसना, हाऊसकीपिंग, वार्ताकौशल, आतिथ्य सत्कार, आदि विषयों पर विस्तृत प्रशिक्षण एवं जानकारी संस्थान के विशेषज्ञों द्वारा दी जा रही है। यह प्रशिक्षण ईकोपर्यटन गतिविधियों को संचालित करने हेतु अत्यन्त लाभप्रद है जिसमें दूरस्थ वनमंडलों में कार्यरत युवाओं को आधुनिक व्यवस्थाओं की जानकारी प्राप्त हो रही है।

वर्ष 2017 में अभी तक तीन प्रशिक्षण सत्र आयोजित किये जा चुके हैं, जिसमें प्रदेश के संरक्षित क्षेत्रों तथा क्षेत्रीय वनमंडलों के 137 श्रमिक तथा कर्मचारियों द्वारा भाग लिया गया।

मटकुली में ट्रेकिंग कैम्प का आयोजन

मध्यप्रदेश ईकोपर्यटन विकास बोर्ड द्वारा दिनांक 12 एवं 13 नवम्बर, 2016 को एक रात्रि एवं दो दिवस के लिये सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मटकुली में ट्रेकिंग कैम्प का आयोजन किया गया। इस ट्रेकिंग कैम्प में प्रतिभागियों को प्रकृति से परिचय के साथ-साथ उसे नजदीक से जानने का अवसर भी प्राप्त हुआ। इस कैम्प में प्रतिभागियों को एल्पाईन टेन्ट (तंबू) में ठहरने का अवसर भी मिला। कैम्प में भाग लेने वालो को जंगल में लगभग 17 कि.मी. की ट्रेकिंग के साथ-साथ जैव विविधता से भी परिचय कराया गया। कैम्प के प्रथम दिवस में फोटो वॉक एवं साहसिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। कैम्प के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किये गये।

नाव चालन प्रशिक्षण

ईकोपर्यटन गतिविधियों के अन्तर्गत प्रदेश में अनेक ईकोपर्यटन गंतव्य स्थलों पर नाव चालन का संचालन किया जा रहा है। नाव चालन गतिविधि पर्यटकों में काफी प्रचलित है जिससे हर वर्ष कई ग्रामीण नाविकों को रोजगार प्राप्त होता है।

नाव चालन गतिविधि में संभावित दुर्घटनाओं को ध्यान में रखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है कि उक्त गतिविधि का संचालन कुशल, प्रशिक्षित एवं लाइसेंसधारी नाविकों द्वारा ही किया जाये। इसके लिये नाविकों को सुरक्षा एवं नौका चालन का विधिवत प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है।

म.प्र. ईकोपर्यटन विकास बोर्ड ने दिनांक 12 सितम्बर, 2017 से 22 सितम्बर, 2017 तक नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वाटर स्पोर्ट्स, गोवा में नाव चालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के तिघरा (ग्वालियर), चंबल (मुरैना), मढ़ई (होशंगाबाद), पायली (सिवनी), बोरियामाल/धारीकोटला (खण्डवा), गांगुलपारा (बालाघाट) स्थलों से चुने गये 15 प्रतिभागियों को जीवन रक्षक तकनीक तथा मोटर बोट चालन एवं उसके रखरखाव का प्रशिक्षण दिया गया।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वाटर स्पोर्ट्स, गोवा द्वारा इन नाविकों को नाव चलाने का लायसेंस भी दिया गया जिसकी वैद्यता दो वर्ष की रहेगी। तत्पश्चात् लायसेंस का नवीनीकरण कराया जा सकेगा। मध्यप्रदेश ईकोपर्यटन विकास बोर्ड द्वारा इस अभिनव पहल को आगे भी जारी रखा जायेगा एवं प्रदेश के विभिन्न जल स्त्रोतों में हो रही जलीय गतिविधियों से जुड़े ग्रामीण नाविकों को प्रशिक्षित किया जायेगा।

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड की गतिविधियाँ

माटी बीज गणेश सजीव अभियान का आयोजन

मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं जैवविविधता संरक्षण हेतु 10 दिवसीय गणेश उत्सव के पूर्व ''माटी गणेश–बीज गणेश–सजीव गणेश'' नवाचार अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान के तहत माटी के गणेश बनाने एवं उसमे फलदार पौधों के बीज बीजारोपित करने के उद्देश्य से जान जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन विभिन्न स्थानों पर विभिन्न संस्थाओं एवं समन्वयकों के सहयोग से क्रियांवित किया गया।

इस कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन सरदार नगर, विकास खण्ड बुदनी, जिला सिहोर, में राज्य सभा सांसद, श्री गणेशन द्वारा दिनांक 16 अगस्त 2017 को किया गया।

इस कार्यक्रम के आयोजन में बोर्ड द्वारा शासकीय, अशासकीय शैक्षणिक संस्थान, स्वयं सेवी संस्थान, निजी संस्थान, रहवासी समितिया, गणेश मण्डल पंडाल, जैवविविधिता प्रबंधन समितियों के द्वारा विभिन्न स्थानों पर माटीं गणेश–बीज गणेश–सजीव गणेश विषय पर प्रशिक्षण एवं बीज गणेश मूर्तिनिर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रत्येक केन्द्र हेतु किट प्रदान की गई जिसमें माटी, खाद, मुलतानी मिट्टी एवं प्रचार प्रसार सामग्री उपलब्ध कराई गई।

इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य के अनुरूप मिट्टी के गणेश में बीज को रखकर अन्नत चतुर्दशी अथवा मूर्ति विसर्जन के दौरान घर के आंगन व सार्वजनिक स्थानों में बीजरोपण द्वारा नदी एवं जलाशयों के पर्यावरण संरक्षण में सहयोग प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में 54 प्रशिक्षण संस्थानों एवं प्रशिक्षकों द्वारा 18 अगस्त 2017 की अवधि में विभिन्न स्थानों पर 124 प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से 24724 प्रशिणार्थी द्वारा 4557 बीज गणेश मूर्तियों का निर्माण किया गया।

जैवविविधता सीख एवं प्रदर्शन केन्द्र की स्थापना

बीज बचाओ–कृषि बचाओ यात्रा के अन्तर्गत बीज रोपण कार्यक्रम 2017 के दौरान जैवविविधता सीख एवं प्रदर्शन केन्द्र की स्थापना सूरज नगर, भोपाल में की गई। कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रुप में श्री दीपक खांडेकर, अपर मुख्य सचिव, वन विभाग उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अनिमेष शुक्ला, वन बल प्रमुख द्वारा की गई।

नवाचार

बाघ की क्रियाशीलता को बनाए रखनें के लिए वन विहार में किया गया अनूठा प्रयोग

दिनांक 28 मार्च 2014 को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल में कान्हा टाईगर रिजर्व मण्डला से पन्ना नामक बाघ को लाया गया था। इसकी उम्र लगभग 7 वर्ष है।

पन्ना काफी चंचल स्वभाव का है। इसकी चंचलता एवं क्रियाशीलता बनाये रखने के लिये उसके बाड़े में इनरिचमेंट के रूप में एक लकड़ी की गेंद रखी गई। इस गेंद का वजन करीब 14.5 कि.ग्रा. है। पन्ना को पहली बार जब गेंद दिया गया तो उसने उसमें रूचि नहीं दिखाई और बस सूंघकर छोड़ दिया। इसके उपरांत उस गेंद को बाड़े से निकालकर मीट के शोरबे में 8 घंटे तक उबाला गया और ठण्डा होने पर उसे पन्ना के समक्ष पुन: रखा गया। इस बार पन्ना को यह गेंद इतनी पसंद आई कि वह उसे पैरों से कभी लुढ़काते हुये खेलता और कभी उसे अपने पैरों पर रख बैठा रहता। पन्ना ने गेंद के साथ काफी उछल-कूद की और अपनी प्रसन्नता भी व्यक्त की। वह काफी समय तक इस 14.5 कि.ग्रा. की गेंद को अपने मुंह में दबाकर पूरे बाड़े में घूमता रहा। रात को उसने गेंद बाँस के भिर्रे में छुपा दी।

Kanha Bhoor Singh School

A Noble Initaitive

Kanha Tiger Reserve, established in the year 1973, is not only one of the prominent reserves in our country, but has also proved itself exemplary in terms of innovative wildlife management and conservation practices. Known to be a safe haven for the tiger and other denizens of the forest, the reserve owes its well-sculpted system to the staff of the park that has considerably invested of itself in this great conservation arena. The Kanha management has undertaken an initiative to start a school for the young children of the staff and those of nearby villages in order to help develop a foundation for their education. This initiative took shape in the summer of 2017. The school has been set up at Mukki. This school would offer admission to the staff's children eligible to enrol in nursery, LKG and UKG as government schools do not offer this facility.

This school-cum-day-care facility will not only allow the children to enjoy a formal educational setting, where they will get used to the idea of a school, learn new concepts, interact with other children etc, but also allow them to be at par with students studying in private schools. An added bonus would be for the parents, who would be less stressed about their children there by allowing them a smoother working schedule.

Apart from tending to the younger children, the school will also provide coaching classes for Maths, Physics, Computer Science and Spoken English. This will help in strengthening the subject knowledge for the elder students. As of now, 4 teachers have been deployed for teaching and running of the school.

सफलता की कहानी

Vulture Conservation: From Chick To Fledgling

Story of two Vulture chicks

The Vulture Conservation and Breeding Centre of Bhopal has successfully done the breeding of both the Long-billed vulture and White-backed vulture. The successful fledging of a Long-billed vulture and a White-backed vulture at the centre is a landmark event indicating successful rearing of the species in captivity for the first time in the country.

Long-billed Vulture

The first ever nestling of Long-billed vulture hatched at VCBC Bhopal fledged on 10th August 2017. The egg hatched on the 2nd of April 2017 and the nestling remained on the nest for approximately 130 days.

The parent vultures kept the nestling warm (brooding) by sitting on it in incubation posture. The brooding continued for almost 45 days after the egg hatched till the nestling was able to maintain its body temperature. The parent vultures however spent most of the time on or near the nest after the brooding had stopped. After the initial 45 days the nestling was able to stand for short durations. This duration increased once it was 60 days old. Both the parents took equal part in rearing the nestling, including feeding, cleaning, brooding and defending the nest. When the nestling was over 110 days old, it was observed that the female vulture started maintaining a distance from the nest. The male vulture however continued to stay near the nestling. The nestling when 120 days old, started to jump and

flap its wings more often on the nest. This was an indication that it would leave the nest soon. It was on the 10th of August 2017 that the nestling took its first flight. The nestling was closely monitored throughout the day, and it was observed to fly around the aviary for about 30 minutes after which it returned to its nest.

White-backed Vulture

Following the hatching of the White-backed vulture chick on the 1st of March, 2017, the parent vultures brooded it for about 45 days, till the chick developed its own thermoregulation. After the brooding period, the chick was under constant care of its parents, who would defend the nest from any other curious vulture. Both the male and female parent were observed to be equally involved in rearing the chick, which included activities such as feeding, cleaning, brooding and defending the nest. When the nestling period of 100 days was over, it was observed that the parents started to maintain a distance from the nest, but were still alert to any potential dangers and would promptly come to the nest to drive away any intruding vulture. After the chick was 110 days old, it would jump and flap its wings in the nest, which was an indication that it would fledge soon. The chick fledged in the early morning of 25th June, when it was seen on a tree placed in the aviary. The chick was closely monitored throughout the day, and it was observed to roam around the aviary and flap fly to various perches and nest cots.

मध्यप्रदेश में संरक्षित क्षेत्रों से स्वैच्छिक ग्राम विस्थापन

मध्यप्रदेश के संरक्षित क्षेत्रों से ग्रामों के विस्थापन की कार्यवाही के लिए प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2011 से अत्यंत प्रभावशाली एवं कल्याणकारी कदम उठाए गए हैं, जिसके कारण वन्यप्राणियों के वास स्थल में वृद्धि हुई है और दूसरी ओर दूरस्थ आंचालो में रहने वाले ग्रामीणों को विकास की मुख्य धारा से जुड़ने में मदद मिल रही है।

वर्ष 2011 से लेकर वर्ष 2017 की अवधि में कान्हा टाईगर रिज़र्व से समस्त गावों को विस्थापन किया जा चुका है और अब कान्हा टाईगर रिज़र्व के क्रिटीकल टाईगर हेबीटेट क्षेत्र में कोई भी गॉव नही है। विस्थापन हो जाने से इस क्षेत्र का अत्यन्त महत्वपूर्ण वन्यप्राणी बारहसिंगा यहाँ आकर अपना डेरा जमा चुके है। वर्तमान में विस्थापित ग्रामीणों के जीवन स्तर में सुधार को देखते हुए कान्हा टाईगर रिज़र्व के बफर जोन में स्थित ग्राम भी विस्थापन कि लिए प्रयासरत है।

विस्थापन क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण सफलता सतपुड़ा टाईगर रिज़र्व में प्राप्त हुई है। यहाँ पर वर्ष 2004 में धाई वनग्राम के विस्थापन के बाद वर्ष 2011 से लगातार गांवो का विस्थापन हो रहा है और जुलाई 2017 तक 42 गांवों का विस्थापन सफलतापूर्वक किया जा चुका है। इन 42 गांव में से केवल 4 गांव ऐसे हैं जो वर्ष 2011 तक प्रोजेक्ट टाईगर की धनराशि से विस्थापित हुए है। अच्छे विस्थापन के लिए एन.टी.सी.ए. द्वारा वर्ष 2011 एवं 2016 में सर्वश्रेष्ट विस्थापन का पुरस्कार भी इस टाईगर रिज़र्व को दिया गया।

दिनांक 19.09.2016 को लिए गए पर्यटन कैबीनेट के निर्णय के अनुसार राज्य शासन ने यह नीति तय की है कि किसी भी गांव को जो घने जंगलों के बीच एवं मुख्य नगरों एवं मार्गों से दूर स्थित हैं और स्वेच्छा से विस्थापन कि लिए तैयार हो तो उन्हों विस्थापित किया जा सकता है। इस नीति से क्रिटीकल टाईगर हेबीटेट के बाहर कारीडोर, बफर तथा अन्य क्षेत्रो में बसे हुए, यहा तक कि क्षेत्रीय वनमंडलों से भी इच्छुक ग्रामीणों का विस्थापन संभव हो रहा है। इससे वनों को पुनर्जीवन देने और उन्हें जैविक दबाव से पूर्णत: मुक्त रखने में मदद मिलेगी तथा जैव विविधिता में वृद्धि होने की प्रबल संभावना है।

सजंय टाईगर रिज़र्व में भी 10 गांवों का सफलतापूर्वक विस्थापन विगत 2 वर्षो में किया जा चुका है, जिसके फलस्वरूप जंगल में जलस्त्रोत, चारागाह, जंगली जानवरो में वृद्धि हो रही है।

नौरादोही अभयारण्य में ग्रामीणों की सहमति से 8 ग्रामों को विस्थापित करने की योजना पर काम चल रहा है। केन बेतवा लिंक परियोजना में बॉधों के बनने के कारण जो जल-भराव पन्ना टाईगर रिजर्व में होगा, उसके फलस्वरूप बाघों के रहवास स्थल में आई कमी को इस अभयारण्य को पन्ना लैण्ड स्केप से जोड़कर पूरा किये जाने की योजना है।

देवास जिले मे विन्ध्य लैण्ड स्केप में स्थित खिवनी अभयारण्य में स्थित गांव खिवनी को मई 2017 मे सफलतापूर्वक विस्थापित किया जा चुका है। मई 2017 तक रातापानी अभयारण्य के दातखोह ग्राम को सफलतापूर्वक विस्थापित कर दिया गया है।

ओरछा अभयारण्य में केवल 2 गांव स्थित हैं। वहाँ पर भी एक गॉव लोटना को जून, 2017 तक विस्थापित किया जा चुका है, तथा दूसरे गांव के विस्थापन का कार्य प्रगति पर है।

विस्थापन के फलस्वरूप कई दुर्लभ वन्यप्राणी प्रजातियॉ और दुर्लभ पौधों की प्रजातियॉ भी सुरक्षित हो गई हैं और फलफूल रही है।

विविधा

वन महोत्सव कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह के साथ शामिल हुए श्री अमित शाह

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार एवं भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह वन महोत्सव शुभारंभ कार्यक्रम में पौधरोपण करते हुए

दिनांक 19 अगस्त 2017 को भोपाल के कलियासोत तट पर आयोजित वन महोत्सव कार्यक्रम के दौरान करीब 2 हजार पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के करकमलों से किया गया। वन महोत्सव में सांसद श्री अमित शाह, वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार एवं मंत्रिपरिषद के सदस्य सम्मिलित हुये।

दम्पत्ति वनमहोत्सव का आयोजन

भोपाल वृत्त के वनमंडल भोपाल के लहारपुर वन परिक्षेत्र में स्थित इकोलॉजिकल पार्क में दिनांक 30-07-2017 को वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार की उपस्थिति में दम्पत्ति वन महोत्सव का अयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव वन, श्री दीपक खाण्डेकर, डॉ. अनिमेष शुक्ला वन बल प्रमुख, भोपाल वन मंडल के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने परिवार सहित अपनी भागेदारी दी।

दम्पत्ति वन महोत्सव की झलकियां

अनुसंधान विस्तार वृत्त भोपाल में पदस्थ वन सेविका श्रीमती सविता गौतम द्वारा दम्पत्ति वन महोत्सव के दौरान मधुबनी एवं पारम्परिक आदिवासी चित्रकला का प्रदर्शन किया गया।

कान्हा टाईगर रिजर्व में हाथी रिजुविनेशन कैम्प का आयोजन

विगत अनेक दशकों से कान्हा टाईगर रिजर्व में हाथियों का प्रबंधन किया जा रहा है। इनमें से कुछ हाथियो को देश के विभिन्न हाथी मेलों से क्रय कर लाया गया है, जबकि कुछ की पैदाइश इसी राष्ट्रीय उद्यान में ही हुई है। प्रांरभ में कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में हाथियों को वनों एवं वन्यप्राणियों की सुरक्षा हेतु गश्ती कार्य में लगाया जाता था, किन्तु कालान्तर में इनका उपयोग पर्यटन प्रबंधन में भी किया जाने लगा।

हाथी रिजुविनेशन कैम्प के दौरान 14 विभागीय हाथियों के स्वास्थ्य की विशेष देख–रेख की गई व हाथियों को अतिरिक्त खुराक, विटामिन्स, मिनरल फल–फूल आदि परोसे गये। इस कैम्प में प्रतिदिन प्रात: चाराकटर द्वारा हाथियों को जंगल से लाकर व उन्हें नहलाकर रिजुविनेशन केम्प में लाया जाता था एवं हाथियों के पैर में नीम तेल तथा सिर में अरण्डी तेल की मालिश की जाती थी। इसके पश्चात् गन्ना, केला, मक्का, आम, अनानास, नारियल आदि खिलाकर जंगल में छोड़ा जाता था। दोपहर में हाथियों को जंगल से पुन: वापस लाकर एवं नहलाकर कैम्प में लाया जाता है। इसके पश्चात् उन्हे रोटी, गुड, नारियल, पपीता खिलाकर पुन: जंगल में छोड़ा जाता था।

रिजुविनेशन कैम्प के दौरान हाथियों के रक्त के नमूने जांच, नाखूनों की ट्रिमिंग, दवा द्वारा पेट के कृमियों की सफाई तथा हाथी दांत की आवश्यतानुसार कटाई की जाती थी।

इस प्रकार के कैम्प के आयोजन से एक ओर जहां हाथियों में नई ऊर्जा का संचार होता है एवं मानसिक आराम मिलता है, वहीं इन सामाजिक प्राणियों को एक साथ समय बिताने का अनोखा अवसर प्राप्त होता है।

कान्हा टाईगर रिजर्व को मिला SKOCH Order- of –merit Award

कान्हा टाईगर रिजर्व को Solid waste के उचित प्रबंधन में उल्लेखनीय कार्य के लिए **SKOCH Order- of –merit Award** से नवाजा गया है। कान्हा टाइगर रिजर्व में Solid waste का उचित प्रबंधन किया जा रहा है, जिसके तहत यहाँ Solid waste को ऑर्गेनिक खाद में बदला जा रहा है। इससे जहाँ एक ओर Solid waste का उचित उपयोग हो रहा है वही दूसरी ओर Solid waste से निर्मित ऑर्गेनिक खाद भी प्राप्त हो रही है।

कान्हा टाईगर रिजर्व को यह अवार्ड दिल्ली में आयोजित 8 व 9 सितम्बर, 2017 को 49वी **SKOCH Conference** में प्रदान किया गया।

कान्हा टाईगर रिजर्व के फील्ड डायरेक्टर डॉ. संजय कुमार शुक्ला एवं उप संचालक श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की **SKOCH Order- of –merit Award** प्राप्त करते हुए।

“ पर्यावरण का रखे ध्यान, तभी बनेगा देश महान”

वन विहार में आये नये मेहमान

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में माह सितम्बर में दो पेंगोलिन लाए गये, जिन्हे बालाघाट में रेस्क्यू किया गया था। एक पेंगोलिन को बालाघाट परिक्षेत्र के बोरी बीट से लगे राजस्व ग्राम बोरी से वन अमले द्वारा रेस्क्यू कर अपनी अभिरक्षा में लिया गया था, तथा दूसरे पेंगोलिन को बालाघाट की ही लाल बर्रा परिक्षेत्र के ग्राम मानपुर से रेस्क्यू कर अपनी अभिरक्षा में लिया गया था।

पेंगोलिन विश्व स्तर पर संकटापन्न प्रजाति का वन्यप्राणी है। उक्त पेंगोलिन की सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं संरक्षण के उद्देश्य से प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) द्वारा इन्हे वन विहार में ट्रांजिट व्यवस्था में रखने की अनुमति प्रदान की गयी। वन विहार में पेंगोलिन को कैप्टिव अवस्था में रखने की व्यवस्था एवं उसके स्वास्थ्य प्रबंधन की जानकारी प्राप्त करने हेतु वन विहार के वन्यप्राणी चिकित्सक डॉ. अतुल गुप्ता के साथ श्री सचिन परसाई वनरक्षक एवं श्री कमलेश चतुर्वेदी वनरक्षक को नंदनकानन चिड़ियाघर भुबनेश्वर उड़ीसा भेजा गया था, जहाँ पेंगोलिन का एक मात्र ब्रीडिंग सेंटर है। वहाँ से जानकारी प्राप्त कर वन विहार में पेंगोलिन के लिये विशेष बाड़ा सजाया गया और उसके लिये पूर्ण सुविधाएं जुटाई। पेंगोलिन ज्यादातर दीमक खाता है और कैप्टिव कंडीशन में उबला अण्डा भी खा लेता है। यह रात्रिचर है और दंतविहीन स्तनधारी प्राणी है। वन विहार में इसकी देखभाल विशेषज्ञों की राय अनुसार वन्यप्राणी चिकित्सक की देखरेख में की जा रही है।

"प्रकृति का ना करे हरण,
आओ बचायें पर्यावरण"

Sensitization Workshop on Conservation Assured Tiger Standards CA|TS)

2nd August 2017

Summary Record of Proceedings

A 1-day sensitization workshop on Conservation Assured Tiger Standards was organized at the RCVP Noronha Academy of Administration, Bhopal on 2nd August 2017 for the Divisional Forest Officers and Chief Conservators of Forests from both Protected and Territorial areas.

The inauguration of the event saw Dr. Joydeep Bose from WWF India give an overview of the CA|TS programme, and the 7 pillars and elements of the standards. This was followed by Dr. Rajesh Gopal, Secretary General (GTF) explaining about the significance of the programme, difference between Management Effectiveness Evaluation (MEE) and CA|TS as well as a brief on the Global Tiger Forum (GTF). After this the Chief Wildlife Warden, Shri Jitendra Agrawal gave insight into the efforts being taken by the state of Madhya Pradesh for tiger conservation.

CA|TS in Madhya Pradesh would be implemented in areas outside Tiger Reserves that are significant for the conservation of tigers. So far, 11 areas including forest divisions and wildlife sanctuaries have been registered with CA|TS.

Shri Khalid Pasha, WWF Singapore presented, in detail, how the accreditation process would be followed through the example of Lansdowne division in Uttarakhand which is the first accredited site in India. This was followed by the description of the MEE process by Dr. S.P. Yadav, Assistant Secretary General (GTF) for the benefit of the Territorial area managers.

The Divisional Forest Officers of select areas made a presentation about the conservation efforts and threats in their areas.
The following important suggestions were made:

- Dr. Rajesh Gopal appreciated the department's effort in managing tigers in urban landscape and stated that a report may be prepared so that this can become a model for the world.
- He suggested that remotely sensed data should be used to understand tiger movement viz-a-viz the temporal changes in land use to prepare an atlas.
- He also suggested that Infrasound deer repellants being used in U.S. should be used as a measure to reduce railway accidents especially in areas like Ratapani Wildlife Sanctuary.

Shri B.S. Bonal, Project Leader (GTF) presented the status of CA|TS implementation and explained the procedure for getting accreditation, which the selected divisions will be following, as under:

- Preparation of self-appraisal report on MEE and CA|TS by the registered divisions as per the prescribed formats (to be made available on the department's website)
- Submission of report to the GTF (implementing agency)
- Field review by the team of experts
- Submission of assessment reports by the experts to the GTF
- Presentation of the assessment reports to the National Committee
- Submission of the report and recommendations of the National Committee to the International Committee for accreditation

The following important decisions were made at the end of the workshop:

1. Divisions to prepare reports according to the formats before the expert teams can visit the areas.
2. A nodal person should be selected from among the staff of the division who would be responsible for preparation and timely submission of the reports
3. BCRLIP contract staff to assist in the process.
4. Final reports to be submitted by March 2018.

क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन

प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन वल प्रमुख मध्यप्रदेश डॉ. अनिमेष शुक्ला की उपस्थिति में छतरपुर, इन्दौर, होशंगाबाद व जबलपुर में एक दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। होशंगााबाद में 7 सितम्बर, जबलपुर में 11 सितम्बर, छतरपुर में 15 सितम्बर तथा इन्दौर में 18 सितम्बर को कार्यशाला का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में वन विभाग की क्षेत्रीय समस्याओं पर वरिष्ठ एवं अधीनस्थ अधिकारियों के द्वारा परिचर्चा कर सुझाव प्रस्तुत किये गये। परिचर्चा में वन्यप्राणी सुरक्षा, सयुक्त वन प्रबंधन, अनुसंधान विस्तार, वन सुरक्षा जैसे महत्वर्ण विषयों को शामिल किया गया। अवैध उत्खनन, मानचित्रों का नवीनीकरण, वन अतिक्रमण, वन्यप्राणियों के रेस्क्यू, जी.एस.टी. लागू होने के कारण आये नये बदलाव आदि महत्वूर्ण विषयो पर भी अधिकारियों द्वारा प्रस्तुतिकरण दिया गया। इन कार्यशालाओं की संस्तुतियों के आधार पर प्रदेश में वन सुरक्षा, वृक्षारोपण, गैर वन क्षेत्रों में वानिकी विस्तार और वन प्रबंध में जनभागीदारी के मुद्दों पर भविष्य की रणनीति तैयार की गई।

Pench Monsoon Trek

The Pench Tiger Reserve organised a three-day wilderness experience of camping and trekking in Rukhad forest of Pench Tiger Reserve Buffer from 4th to 6th August, 2017. The trek started from Rukhad and continued till Sakata.

The Rukhad-Sakata trek in the buffer forest of Pench Tiger Reseve passes through some of the pristine forests in Central India. These forests were a part of Pench-Kanha corridor. The trek took its participants through several scenic spots like Kuraigarh & Hathidoh and culminated in the forest village of Sakata with its old heritage Forest with its old heritage Forest Rest house in 1903.

The day wise activities of the trek were as follows :-

Day 0: Assemble at Rukhad night camp at Dudhia Talab

Day 1: Trek from Dudhia Talab to Dhaman Manda via climbing Kuraigarh & night camping near Dhaman Manda.

Day 2: Trek from Dhaman Manda to Sakata via Hathidoh & night camping near Dhaman Manda.

Day 3: Exploration of nearby area of Sakata.

विभागीय समाचार एवं गतिविधियां

1.राज्य वन्यप्राणी बोर्ड की बैठक सम्पन्न – माननीय मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में दिनांक 10 जुलाई, 2017 को वन्यप्राणी बोर्ड की बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक में प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यानों एवं अभ्यारण्यों के बेहतर प्रबंधन के साथ ही विकास कार्यों की अनुमति के प्रस्तावों पर चर्चा की गई। इस अवसर पर माननीय वन मंत्री तथा राज्य वन्यप्राणी बोर्ड के सदस्य उपस्थित थे। इस बैठक में बताया गया कि कान्हा और सतपुड़ा टाईगर रिजर्व को तीसरी एशियन मिनिस्ट्रीयल कान्फ्रेंस दिल्ली में वन्यप्राणी प्रबंधन के लिए पुरस्कृत किया गया है।

2.पन्ना टाईगर रिजर्व में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि – पन्ना टाईगर रिजर्व में 30 जून, 2017 को समाप्त हुए पर्यटन वर्ष 2016–17 में 38 हजार 445 पर्यटकों ने भ्रमण किया। पर्यटकों में 28 हजार 79 भारतीय तथा 10 हजार 466 विदेशी पर्यटक शामिल थे। पन्ना टाईगर रिजर्व का अंतराष्ट्रीय पर्यटन वेबसाइट ''ट्रिप एडवाइजर'' द्वारा पिछले साल की तरह इस साल भी अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस, 2017 के लिये चयन किया गया है। यह अवार्ड पर्यटकों के भ्रमण के बाद संतुष्टि के आधार पर दिया जाता है।

3.वन विहार में हुआ बारासिंगा शावक का जन्म–

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल के ब्रीडिंग सेंटर में एक बारहसिंगा ने बच्चे को जन्म दिया है। मध्य प्रदेश का राज्य पशु बारहसिंगा (हार्ड ग्राउण्ड बारहसिंगा) पूरे विश्व में केवल मण्डला के कान्हा टाईगर रिजर्व मे ंही पाया जाता है। ब्रीडिंग सेंटर में बारहसिंगा के शावकों का जन्म वनविभाग के लिये एक बड़ी उपलब्धि है।

अखबारों के आइने में

THE TIMES OF INDIA

Best wishes flood social media for green drive

CG CM Applauds 'Chouhan Ji For A Successful Drive'

THE TIMES OF INDIA

Van Vihar sets an example in nilgai nasbandi

एनटीसीए आईजी ने देखी इलेक्ट्रॉनिक आई की कार्यप्रणाली

वनकर्मियों का सत्कार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

ईको पर्यटन से ग्रामीण अंचलों में रोजगार

मप्र में 2018 तक 350 से ज्यादा हो सकती है बाघों की संख्या

आंगनबाड़ियों में रोपे आंवला-मुनगा के साढ़े पांच हजार पौधे, ताकि मिटे कुपोषण

लघु वनोपजों के संग्रहण से बिचौलिए होंगे बाहर

1987 बैच के IFS ऑफिसर्स ने किया प्लांटेशन

July 2 to be observed as Plantation Day in MP: Chouhan

हरिभूमि

प्रदेश में पांच और नए वाइल्ड लाइफ रेस्क्यू स्क्वाड का गठन, अब हुए 15

अब सीहोर, औबेदुल्लागंज में बनाए जाएंगे बाघ मित्र

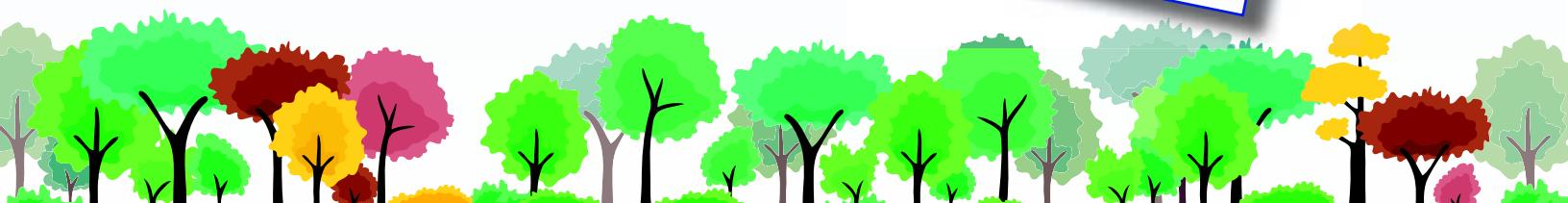

प्रशंसा एवं पारितोषिक

वन एवं वन्यप्राणी संरक्षण में उत्कृष्ट कार्यो के लिये 40 वनकर्मी सम्मानित

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भोपाल के वन विश्राम गृह परिसर पर आयोजित ध्वजारोहण कार्यक्रम के पश्चात प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. अनिमेष शुक्ला ने वन एवं वन्यप्राणियों के संरक्षण और विकास में सराहनीय काम करने के लिये प्रदेश के विभिन्न वन मंडलो के 40 वनकर्मियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रबंध संचालक वन विकास निगम श्री रवि श्रीवास्तव व प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य-प्राणी) श्री जितेन्द्र अग्रवाल भी उपस्थित थे।

वन्य-प्राणी अपराध अन्वेषण के क्षेत्र मे सम्मानित वनकर्मी

- श्रीमती प्रतिभा अहिरवार, सहायक वन संरक्षक इंदौर
- श्री नरेन्द्र सिंह चौहान, उप वन क्षेत्रपाल होशंगाबाद
- श्री प्रदीप यादव, वनरक्षक भोपाल
- श्री धर्मेन्द्र मोहारे, वनरक्षक भोपाल
- श्री जसवंत सिंह, वनरक्षक भोपाल
- श्री रोहित सिंह, चौहान, वनरक्षक इंदौर
- श्री राजीव शर्मा, वाहन चालक भोपाल
- श्री वीर सिंह जाट, सागर

वन्य जीव अपराध नियंत्रण प्रकोष्ठ नई दिल्ली भारत सरकार द्वारा सम्मानित

- श्री इंदर सिंह बारे, वन क्षेत्रपाल भोपाल
- श्री चन्द्रशेखर शर्मा, वनपाल, भोपाल
- श्री अनिल यादव, वनरक्षक, भोपाल
- श्री रवि शर्मा, वनरक्षक, भोपाल
- श्री प्रदीप यादव, वनरक्षक, भोपाल
- श्री अवधेश परमार, वनपाल इंदौर

राज्य वन विकास निगम के सम्मनित कर्मी

- श्री प्रफुल्ल मेश्राम, सहायक परियोजना क्षेत्रपाल, सिवनी
- श्री अजय कामड़े, उप वन क्षेत्रपाल, सिवनी
- श्री एच.एल. दाहिया, सहायक परियोजना क्षेत्रपाल, सिवनी
- श्री शीतल सिंह कुशवाहा, उप वन क्षेत्रपाल, भोपाल
- श्री कमल सिंह नायक, सहायक परियोजना क्षेत्रपाल, भोपाल
- श्री गणेश नायक, सहायक परियोजना क्षेत्रपाल, भोपाल
- श्री अतुल वाजपेयी, सहायक परियोजना क्षेत्रपाल, जबलपुर
- श्री तिमरेश इवने, सहायक परियोजना क्षेत्रपाल, जबलपुर
- श्री सत्यप्रकाश उपाध्याय, सहायक परियोजना क्षेत्रपाल, जबलपुर

भोपाल वन वृत्त से सम्मानित वनकर्मी

- श्री सुरेश कुमार शर्मा, उप वन क्षेत्रपाल
- श्री कृष्ण मोहन शर्मा, उप वन क्षेत्रपाल
- श्री लक्ष्मीनारायण रोसिया, वनपाल
- श्री डी.पी.एस. चौहान, वनपाल
- श्री महेन्द्र चौहान, वनरक्षक
- श्री ओंकारनाथ दीक्षित, वनरक्षक
- श्री रवीन्द्र श्रीवास्तव, वनरक्षक
- श्री सुनील कुमार शर्मा, वनरक्षक
- श्री मेहबूबउल्ला खाँ, वनरक्षक
- बीट गार्ड श्री ज्ञान सिंह कीर, वनरक्षक
- श्री राजकुमार पाण्डे, वनरक्षक
- श्री संजय शर्मा, वनरक्षक
- श्री मनोज कुमार मिश्र, वनरक्षक
- श्री यादवेन्द्र सिंह यादव, वनरक्षक

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त भोपाल के सम्मानित वन कर्मी

- श्री अनिल वर्मा, वनपाल
- श्री सुरेश बाबू दुबे
- श्री आशीष खापरे, वनरक्षक

मध्यप्रदेश शासन के लोकनिर्माण मंत्री श्री रामपाल सिंह द्वारा दिनांक 15 अगस्त 2017 को जिला रायसेन में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर वन सुरक्षा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु श्री रवीन्द्र कुमार बैस उप वनमण्डलाधिकारी सिलवानी सामान्य वनमण्डल को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

दिनांक 15 अगस्त 2017 को स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर वन सुरक्षा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु हरदा जिले के वनमण्डल अधिकारी श्री अनिल कुमार सिंह को पुरस्कृत किया गया।

हरित साहित्य

जंगल

बहुलता वन्य प्राणी की, गगनचुंबी हरे जंगल।
ये कुदरत के खजाने हैं विविधता से भरे जंगल।

कहीं पर घाटियों पर ये, खड़े हैं मौन योगी से,
अधिकतर हैं धराशायी कुल्हाड़ी से गिरे जंगल।

चराई, चोर, व्यापारी, शिकारी, आग या तस्कर,
ये कितने दुश्मनों से हैं घिरे, सहमें, डरे जंगल।

सही है बात शत प्रतिशत, जहां पहुंचा नहीं इन्सां,
वहीं पर हैं बचे थोड़े बहुत बाकी खरे जंगल।

भवन निर्माण की लकड़ी, जलावन, और चारे की,
जरूरत के दबावों से हुये हैं अधमरे जंगल।

जहां विस्थापनों की फिर समस्या उठ खड़ी होगी,
उसी निर्माण के फिर से मुहाने पर धरे जंगल।

बचा लेना विरासत ये, कहीं ऐसा न हो इक दिन,
नजर से या पहुंच से फिर चले जायें परे जंगल।

नहीं कुछ चेतना जागी, रहीं कुछ नीतियां भ्रामक,
बुरे से भी चले आये इधर होते बुरे जंगल।

उधर है लुप्तता का डर इधर है डूब का खतरा,
कुआं, खाई तरफ दोनों, करे तो क्या करे जंगल।

पुनर्स्थापना की लय हमें ही साधना होगी,
तभी फिर सुर में गायेगें हमारे बेसुरे जंगल।

रत्नदीप खरे
वन विस्तार अधिकारी,
अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, झाबुआ म.प्र

लकड़ी

(मानव जीवन में लकड़ी का महत्व)

जीवे भी लकड़ी, मुवे भी लकड़ी, देख तमाशा लकड़ी का
क्या जीवन क्या मरण कबीरा, खेल रचाया लकड़ी का

जा में तेरा जनम हुआ,वो पलंग बनाया लकड़ी का
जा में तेरा बचपन सोया, वो पलना था लकड़ी का
क्या जीवन क्या मरण कबीरा, खेल रचाया लकड़ी का

गया पाठशाला पढ़ने को, मार पड़ा था लकड़ी का
बचपन में खेला जिससे, वो गिल्ली-डंडा लकड़ी का
क्या जीवन क्या मरण कबीरा, खेल रचाया लकड़ी का

जिसमें तेरा ब्याह रचाया, वो मंडप था लकड़ी का
वृद्ध हुआ और चल नहीं पाया, लिया सहारा लकड़ी का
क्या जीवन क्या मरण कबीरा, खेल रचाया लकड़ी का

जिसमें तेरा शव बांधा, वो अर्थी ढांचा लकड़ी का
जिसमें तुझे जलाया था, वो ढेर चिता था लकड़ी का
क्या जीवन क्या मरण कबीरा, खेल रचाया लकड़ी का

क्या राजा, क्या रंक मनुष तन, अंत सहारा लकड़ी का
कहत कबीर सुनो भई साधो, लै लो तंबूरा लकड़ी का
क्या जीवन क्या मरण कबीरा, खेल रचाया लकड़ी का

रामशंकर पाटिल, भोपाल
सहायक ग्रेड-3
कार्यालय मुख्य वन संरक्षक(उत्पादन)

Ecotourism Destinations in Madhya Pradesh : Kukru Khamla

Over the decades Madhya Pradesh has successfully emerged as one of the most sought after ecotourism destination of India. In this resounding success Betul district has also made immensely valuable contribution. Kukru Khamla is one of the hidden gems of Betul district. It is actually a small hillock area surrounded by lush green Satpuda Mountain ranges. From the atop of the hill you get a panoramic view of Satpuda mountain ranges, images of which are surely going to mesmerize one's memory for years to come. The spot is close to Chikaldara, a known hill station of Maharashtra under Melghat Tiger Reserve. This place is also known as 'abode of beautiful birds'. For many decades this small hillock area has been attracting beautiful migratory birds, which has made it one of the must visit tourist attractions in Betul district. The Madhya Pradesh Ecotourism Board provides an enriching experience to the tourists visiting Kukru Khamla. Activities like trekking on natural trails, bird watching and landscape photography become the centre of attraction for the tourists. There is also the facility of camping at night in comfortable tents which tourists really enjoy.

पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति

भारतीय वन सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी (जुलाई-सितम्बर, 2017)

1. डॉ. एल.के चौधरी, प्रधान मुख्य वन संरक्षक
2. डॉ. वाय. सत्यम, प्रधान मुख्य वन संरक्षक
3. डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
4. श्री अशोक भाटिया, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
5. श्री अजय शंकर, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
6. श्री अरूण कुमार, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
7. श्री आर.पी. सिंह, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
8. श्री राज बिहारी शर्मा, मुख्य वन संरक्षक
9. श्री कैलाश प्रसाद बांगर, वन संरक्षक

भारत सरकार पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय नई दिल्ली की अधिसूचना द्वारा चयन वर्ष 2015 एवं 2016 हेतु राज्य वन सेवा अधिकारियों की भारतीय वन सेवा संवर्ग में की गई पदोन्नति दिनांक 19 जुलाई 2017 -

1. हरिशंकर मिश्रा
2. रमेश चंद्र विश्वकर्मा
3. अजय कुमार पांडे
4. एस.के.एस.तिवारी
5. आदर्श श्रीवास्तव
6. कमल अरोरा
7. प्रेम नारायण मिश्रा
8. एन.एस.यादव
9. अनिल कुमार शुक्ला
10. मोहनलाल हरित
11. एम.एस.भगदिया
12. के.एस. पट्टा